भारत (मिथिला)–नेपाल, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंध(अतीत से वर्तमान तक)

डॉ0 कुन्दन कुमार

एम0 ए0, पी0–एच0 डी0 (इतिहास)

बी0 आर0 ए0 बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

भारत स्थित मिथिला संस्कृति की जड़े वर्त्तमान में इतनी गहरी भूमि में छूपी हुई है कि इसके लिए अतीत की भूमि खोदनी पड़ेगी। पैराणिक कथाएँ सर्वप्रथम विदेह माथव को ही इस कीचड़मयी दलदली भूमि में अग्नि प्रज्जवालित करने की पुष्टि करता है।

वास्तव में विदेह माथव के साथ सदानीरा के तटीय क्षेत्र में पहुँचे पुरोहित गौतम रहूगण ने सर्वप्रथम एक आश्रम की स्थापना की थी। कालन्तर में इसी आश्रम के आस–पास जयन्त नामक नगर बसा। कुछ समय बाद सदानीरा नदी को पार कर नदी के पूर्वी भाग में इक्ष्वाकु वंशे के निमि के पुत्र मिथि ने ' मिथिला' नामक नगर की स्थापना की।

प्रोफेसर बेवरण के अनुसार, मिथिला की स्थापना वैदिकयुग के बाद ब्राह्मण काल में हुआ था।

वाल्मीकिय रामायण तथा विष्णु–पुराण के अनुसार जनक राजाओं के शासनकाल में मिथिला राज्य अध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक उन्नति की चरम सीमा तक पहुँच गया।

मिथिला की सांस्कृतिक पहचान उसकी लोकभाषा मैथिली है, जिसकी उत्पत्ति 9 वी से 10 वी शताब्दी में हुआ। इसका प्रयोग मुख्यतः मैथिली ब्राह्मण किया करते थे। बौद्ध ग्रंथ ललित विस्तर को 'मिथिलाक्षर' अथवा 'मैथिली' लिपि का ही प्रचीनतम स्वरूप माना जाता है।

डॉ0 ग्रियर्सन के अनुसार , मधुबनी सहित दरभंगा, भागलपुर के उत्तरी भू–भाग तथा पूर्णिया के पश्चिमी भू–भाग में मैथिली अपनी परिष्कृत रूम में बोली जाती है। बिहारी लोक भाषाओं में मात्र मैथिली भाषा में ही सर्वाधिक साहित्यों की रचना हुई है। मैथिली के सबसे बड़ी विशेषता इसका प्रेम–रस है, जिसमें माधुर्य तथा लयात्मक स्वर विन्यास देखने लायक है।

1097 ई0 में नान्यदेव द्वारा मिथिला क्षेत्र में कर्णाट वंश की नींव रखने के पश्चात् मिथिला की सभ्यता संस्कृति में काफी बदलाव आया। इसकी संस्कृति का विस्तार नेपाल तक हो गया। जब नाम्यदेव ने नेपाल को विजित कर इसके तराई के पूर्वोतर क्षेत्र में स्थित सिमरावगढ़ को अपनी राजधानी बनाया।

नेपाल के उत्कीर्ण लेखों, जिनमें काठमाण्डू का लेख सबसे महत्वपूर्ण है, से उन कर्णाट राजाओं की वंशक्रमावली का स्पष्ट बोध होता है, जिन्होनें नेपाल अधिराज्य पर शासन किया था।

यद्यपि कर्णाट वंशीय शासन करीब तीन सौ वर्षो तक कायम रहा। लेकिन इन थोड़े से ही दिनों में शासनों ने मिथिला कला एवं संस्कृति को काफी समृद्ध किया। इस काल के प्रसिद्ध शासक नन्द देव ने स्वयं संगीत सम्बन्धी रचना लिखी। इस काल में सूफी सन्तों के द्वारा भी संगीत के विकास में योगदान दिया गया।

मिथिला की सभ्यता–संस्कृति को उन्नत करने में कर्नाट वंश के दौरान उत्पन्न मधुबनी चित्रकला की महत्वपूर्ण भूमिका थी, जिसकी ख्याति वर्तमान समय में विश्व स्तर तक है। चित्रकला के विकास के लिए शासकों ने अपने दरबार मं अनेक कलाकारों को संरक्षण दिया। इस चित्रकला में महिलाओं की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, जिन्होंने मनुष्यों एवं वस्तुओं के चित्र सांकेतिक रूप में बनाएँ। ये चित्र दो प्रकार के होते थे–भित्ति चित्र एवं अरिपन।

भित्ति चित्र के तीन रूप थे– (1) गोसनी की घर की सजावट (2) कोहबर घर की सजावट (3) कोहबर घर की कोणिय–आकृति। पहली श्रेणी के चित्र धार्मिक महत्व के होते थे, जबकि अन्य दो में प्रतीकों का उपयोग अधिक होता था। धार्मिक भित्ति चित्र में दुर्गा, राधा–कृष्ण, सीता–राम , शिव–पार्वती विष्णु–लक्ष्मी आदि का अधिक चित्रण होता है। कोहबर घर के बाहर एवं भीतर बने चित्र कामुक प्रवृति के बने होते है। पृष्टभूमि के लिए पशु–पंक्षियों और वनस्पत्तियों के चित्र बनाये जाते है, मगर इनका भी प्रतीकात्मक महत्व होता है।

मधुबनी कला का दूसरा रूप है, अरिपन चित्र। यह आंगन में या चौखट के सामने जमीन पर बनाये जाने वाले चित्र है। इन्हें बनाने में कूटे हुए चावल को खासकर उंगली से ही बनाते है। (1) मनुष्य और पशु–पक्षियों को दर्शाने वाले चित्र (2) फूल, पेड़ एंव फलों के चित्र (3) तंत्रवादी प्रतीको पर आधारित चित्र (4) देवी–देवताओं के चित्र (5) स्वस्तिक, दीप आदि के आकार बनाये जाते है।

मिथिला की सभ्यता–संस्कृति में पंजी व्यवस्था का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण योगदान है। 14 वीं शताब्दी में इस प्रथा की जन्म मिथिला –मैथिली संस्कृति को उन्नत एंव शुद्ध बनाने के दृष्टिकोण से हुआ। यह मिथिला के ब्राह्मण एवं कायस्थ परिवारों में शुरू हुआ।

कर्णाट–कुल–नरेश राजा हरिसिंह देव की आज्ञा से 1310 व 1313 के बीच मैथिली ब्राह्मण समाज को चार विभागों में वर्गीकरण किया गया। वे थे–श्रोत्रिय, योग्य, पंजीबद्ध एवं जैबार।

मिथिला की सांस्कृति पहचान न केवल भारत बल्कि पड़ोसी देश नेपाल तक इतनी अधिक प्रसरित थी कि यहाँ के सम्राट हरिसिंह देव को यहाँ संप्रभु सम्राट के रूप में

स्वीकार करते हुए इन्हें कर्णाट 'चूड़ामणि' के उपाधि से विभूषित किया जाता है। इसकी पुष्टि काठमान्डू अभिलेख से होती है। साथ की काठमाण्डू अभिलेख में वर्णित है कि,

"जात श्री हरिसिंह देव नृपतिः प्रौढ़ प्रतापोदयः
तद्वेशे विमले महारिपुहरे गाम्भीर्य रत्नाकरः
कर्त्तायः सरसामुपेत्य मिथिलां संलक्ष्य लक्षत्रियों
नेपाले पुरराढ़य वैभवयुते स्थैर्यः चिरम् विध्यतें "

स्पष्ट है कि नेपाल के लोग यहाँ की स्वच्छ संस्कृति से प्रभावित थे। डॉ0 के0 पी0 जयसवाल का भी मत है कि नेपाल की जनता तथा स्थानीय शासक स्वधर्मी, स्वजातीय तथा स्वेदशीय समझकर हरिसिंह की प्रभुत्ता स्वीकार की।

वर्तमान में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एक मात्र ऐसे नेता है जिन्होनें पूरे विश्व के साथ–साथ अपने पडोसी देश नेपाल के साथ संबन्धों को मजबूत करने के लिए हर संम्भव प्रयास कर रहे है। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या सांस्कृति संबंध हो पिछले 6 वर्षो के अन्दर करोड़ो रूपए शिक्षा के विकास के लिए भारत के तरफ से दिए गए है इसक आलावा इन्होने नेपाल के काठमाण्डू स्थित पाशुपति मंदिर जो भागवान शिव को समर्पित है, दर्शन किए साथ ही पोखरा से 300 किमी0 दूर मूक्तिनाथ स्थित भागवान शिव के दर्शन किए इससे बढ़के आज भी भारत और नेपाल मे वैवाहिक संबंध स्थित है ।

नेपाल के लोगों की कमर्थता को देखते हुए भारत के रक्षा क्षेत्र में सैनिकों की भर्ती की जाती है जिसमें प्रमुख है गोरखा रेजीमेंन्ट। यहाँ तक की नेपाल के छात्रों का भारत के शिक्षण संस्थानों में नमांकन होता है स्पष्ट है कि भारत–नेपाल संबंध आज भी वर्तमान समय मे कायम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचिः–

1.आधुनिक भारत–एल0 पी0 शर्मा ,दिल्ली

2. इडिया–नेपाल एग्री टू स्टार्ट वर्क एट कोशी इनबैंकमेन्ट।

द हिन्दू चेन्नई 1 अक्टूबर 2008

3. मोदी टू एडरेस नेपाल पारलियामेंट प्रे टू पाशुपति टेम्पल– आई0 ए0 एन0 एस0 25 जुलाई 2014

4. सक्सेस मिरर – अक्टूबर 2014

5. प्रतियोगिता दर्पण– अक्टूबर 2014

6. बिहार प्रभात खबर– नवम्बर 2014